एक

गाँव में यह खबर तुरत बिजली की तरह फैल गई—मलेटरी ने बहरा चेथरू को गिरफ्फ कर लिया है और लोबिनलाल के कुएँ से बाल्टी खोलकर ले गए हैं ।

यद्यपि 1942 के जन-आंदोलन के समय इस गाँव में न तो फौजियों का कोई उत्पात हुआ था और न आंदोलन की लहर ही इस गाँव तक पहुँच पाई थी, किंतु जिले-भर की घटनाओं की खबर अफवाहों के रूप में यहाँ तक जरूर पहुँची थी । ··· मोंगलाही टीशन पर गोरा सिपाही एक मोदी की बेटी को उठाकर ले गए । इसी को लेकर सिख और गोरे सिपाहियों में लड़ाई हो गई, गोली चल गई । ढोलबाजा में पूरे गाँव को घेरकर आग लगा दी गई, एक बच्चा भी बचकर नहीं निकल सका । मुसहरू के ससुर ने अपनी आँखों से देखा था—ठीक आग में भूनी गई मछलियों की तरह लोगों की लाशें महीनों पड़ी रहीं, कौआ भी नहीं खा सकता था; मलेटरी का पहरा था । मुसहरू के ससुर का भतीजा फारबिस साहब का खानसामा है; वह झूठ बोलेगा ? पूरे चार साल के बाद अब इस गाँव की बारी आई है । दुहाई माँ काली ! दुहाई बाबा लरसिंह !

यह सब गुअरटोली के बलिया की बदौलत हो रहा है ।

बिरंचीदास ने हिम्मत से काम लिया; आँगन से निकलकर चारों ओर देखा और मालिकटोला की ओर दौड़ा । मालिक तहसीलदार विश्वनाथप्रसाद भी सुनकर घबड़ा गए, "लोबिन बाल्टी कहाँ से लाया था ? जरूर चोरी की बाल्टी होगी ! साले सब चोरी करेंगे और गाँव को बदनाम करेंगे ।"

मालिकटोले से यह खबर राजपूतटोली पहुँची—कायस्थटोली के विश्वनाथ-प्रसाद और ततमाटोली के बिरंची को मलेटरी के सिपाही पकड़कर ले गए हैं । ठाकुर रामकिरपाल सिंह बोले, "इस बार तहसीलदारी का मजा निकलेगा । जरूर जमींदार का लगान वसूल कर खा गया है । अब बड़े-घर की हवा खाएँगे बच्चू !"

यादवटोली के लोगों ने खबर सुनते ही बलिया उर्फ बालदेव को गिरफ्तार कर लिया । भागने न पाए ! रस्सी से बाँधो ! पहले ही कहा था कि यह एक दिन सारे गाँव को बँधवाएगा ।

तहसीलदार विश्वनाथप्रसाद एक सेर घी, पाँच सेर बासमती चावल और एक

खस्सी लेकर डरते हुए मलेटरीवालों को डाली पहुँचाने चले, बिरंची को साथ ले लिया । बोले, "हिसाब लगाकर देख लो, पूरे पचास रुपए का सामान है । यह रुपया एक हफ्ता के अंदर ही अपने टोले और लोबिन के टोले से वसूल कर जमा कर देना । तुम लोगों के चलते ··· ।"

मलेटरीवाले कोठी के बगीचे में हैं । बगीचे के पास पहुँचकर विश्वनाथप्रसाद ने जेब से पलिया टोपी निकालकर पहन ली और कालीथान की ओर मुँह करके माँ काली को प्रणाम किया, "दुहाई माँ काली !"

बगीचे में पहुँचकर तहसीलदार साहब ने देखा, दो बैलगाड़ियाँ हैं; बैल घास ख रहे हैं; मलेटरीवाले जमीन पर कंबल बिछाकर बैठे हैं । ऐं ··· । मूढ़ी फाँक रहे हैं ! और बहरा चेथरू भी कंबल पर ही बैठकर मूढ़ी फाँक रहा है !

"सलाम हुजूर !"

बिरंची ने सामान सिर से नीचे उतारकर झुककर सलाम किया, "सलाम सरकार !" ··· बकरा भी मेमिया उठा ।

"आ रे, यह क्या है ? आप कौन हैं ?" एक मोटे साहब ने पूछा ।

"हुजूर, ताबेदार राजा पारबंगा का तहसीलदार है, मीनापुर सर्किल का ।"

"ओ, आप तहसीलदार हैं ! ठीक बात ! हम लोग डिस्ट्रिक्ट बोर्ड का आदमी है । यहाँ पर एक मैलेरिया सेंटर बनेगा । ऊपर से हुकुम आया है, यहीं बागान का जमीन में । मार्टिनसाहब डिस्ट्रिक्ट बोर्ड को यह जमीन बहुत पहले दे दिया ।"

तहसीलदार साहब फिर एक बार सलाम करके बैठ गए । बिरंची हाथ जोड़े खड़ा रहा ।

राजपूतटोली के रामकिरपालसिंघ जब कोठी के बगीचे में पहुँचे तो उन्होंने देखा कि बगीचे के पच्छिमवाली जमीन की पैमाइश हो रही है; कुछ लोग जरीब की कड़ी खींच रहे हैं, टोपावाले एक साहब तहसीलदार साहब से हँस-हँसकर बातचीत कर रहे हैं ।

और अंत में यादवटोली के लोग बालदेव के हाथ और कमर में रस्सी बाँधकर हो हल्ला मचाते हुए आए । उसकी कमर में बँधी हुई रस्सी को सभी पकड़े हुए हैं । फिरारी सुराजी को पकड़नेवालों को सरकार बहादुर की ओर से इनाम मिलता है—एक हजार, दो हजार, पाँच हजार ! लेकिन साहब तो देखते ही गुस्सा हो गए, "क्या बात है ? इसको क्यों बाँधकर लाया है ? इसने क्या किया है ?"

"हुजूर, यह सुराजी बालदेव गोप है । दो साल जेहल खटकर आया है; इस गाँव का नहीं, चन्ननपट्टी का है । यहाँ मौसी के यहाँ आया है । खध्धड़ पहनता है, जैहिन्द बोलता है ।"

"तो इसको बाँधा है काहे ?"

"अरे बालदेव !" साहब के किरानी ने बालदेव को पहचान लिया, "अरे, यह

तो बालदेव है । सर, यह रामकृष्ण कांग्रेस आश्रम का कार्यकर्त्ता है; बड़ा बहादुर है ।"

यादवों के बंधन से मुक्ति पाकर बालदेव ने साहब और किरानी को बारी-बारी से 'जाय हिंद' किया । साहब ने हँसते हुए कहा, "आपका गाँव में मलेरिया सेंटर खुल रहा है । खूब बड़ा डाक्टर आ रहा है । डिस्ट्रिक्ट बोर्ड का तरफ से मकान बनेगा । लेकिन बाकी काम तो आप लोगों की मदद से ही होगा ।"

तहसीलदार साहब ने जमींदार खाते और नक्शे को तजवीज करके कहा, "हुजूर, जमीन एक एकड़ दस डिसमिल है ।"

ठाकुर रामकिरपालसिंघ को अब तक साहब को सलाम करने का भी मौका नहीं मिला था । विश्वनाथप्रसाद ने बाजी मार ली । जिंदगी में पहली बार सिंघ जी को अपनी निरक्षरता पर ग्लानि हुई । सचमुच विद्या की महिमा बड़ी है । लेकिन भगवान ने शरीर दिया है, उच्चजाति में जन्म दिया है । इसी के बल पर बहुत बाबू-बबुआन, हाकिम-हुक्काम और अमला-फैला से हेलमेल हुआ, जान-पहचान हुई । मौका पाते ही सलाम करके जोर से बोले, "जै हो सरकार की ! हुजूर, पबली को भलाय के वास्ते इतना दूर से कष्ट उठाकर आया है, और हम लोग हुजूर का कोई सेवा नहीं कर सके । गुसाईं जी रमैन में कहिन हैं—'धन्य भाग प्रभु दरशन दीन्हा ··· ।' हुजूर, सेवक का नाम रामकिरपालसिंघ वल्द गरीबनेवाज-सिंघ, मोत्तफा, जात राजपूत, मोकाम गढ़बुंदेल राजपुताना, हाल मोकाम मेरीगंज ।"

"सिंह जी, हमारा कोई सेवा नहीं चाहिए । सेवा के वास्ते मैलेरिया सेंटर खुल रहा है । इसी में मदद कीजिए सब मिलकर । यही सबसे बड़ा सेवा है ।" साहब हँसते हुए बोले ।

यादवटोली के लोग एक-एक कर, नजर बचाकर, नौ-दो-ग्यारह हो चुके थे । उन्हें डर था कि बालदेव को बाँधकर लानेवालों का साहब चालान करेंगे ।

साहब ने चलते समय कहा, "सात दिन के अंदर ही डिस्ट्रिक्ट बोर्ड का मिस्तिरी लोग आवेगा । आप लोग बाँस, खढ़, सुतली और दूसरा दरकारी चीज का इंतजाम कर देगा । तहसीलदार साहब, आप हैं, बालदेवप्रसाद तो देश का सेवक ही है, और सिंह जी हैं । आप सब लोग मिलकर मदद कीजिए ।"

सबने हाथ जोड़कर, गर्दन झुकाकर स्वीकार किया । साहब दलबल के साथ चले । खस्सी मेमिया रहा था । बालदेव गाड़ी के पीछे-पीछे गाँव के बाहर तक गया ।

बालदेव ने लौटकर लोगों से कहा, "डिस्टीबोट के बंगाली आफसियरबाबू थे परफुल्लो बनरजी, और उनका किरानी जीत्तनबाबू, पहले कांग्रेस आफिस के किरानी थे ।"